

2

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथैकं नूतनं पारावा लां दुःसासनेना हत
 वसु केशा ॥ क्लृप्ता तदा शोभा दत्तं ज्योत्स्ना यजो विन्द दामोदरमा
 धवेति ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण विस्मो न धुकेट भावे भक्तानु कं पिठं
 गवन्मुनाये ॥ आयस्य मां केशव लोकनाथ ज्यो विन्द दामोदरमा
 धवेति ॥ २ ॥ विक्केतु कासा खिल गोपक ल्या मुनायि
 पादा ध्वित चित्र वृत्तिः ॥ दध्यादिकं नो ह्यशो दयो वदो विन्द दामो
 दरमा धवेति ॥ ३ ॥ उल्लखले संभृतं तं दुर्लभं संघट्ट पण्योक्तं
 शाले श्वनुद्धाः ॥ गायन्ति ज्योत्स्ना नितानुनागा ज्यो विन्द दामो

वि० मं०

॥२॥

॥३॥

विचित्रवस्त्राभिराभिनामाविधाप्रवकाधुजनाजहंसः
॥सदामदीपैरेवसनाप्रवजेगेविन्ददामोदरमाधवेति॥८॥
श्राधिवृद्धसिशुगेपवृद्धस्तनंधपंतकनलैककान्तं॥संबोध
प्रामासमुदायशोदागेविन्ददामोदरमाधवेति॥९॥
इंतमंतर्वृजमात्मजंखंसमंचयस्थेःप्रशुपात्रपात्रैः॥प्रे
म्मायसोदाचजुहावक्तृसंमोविन्ददामोदरमाधवेति॥१०॥
पसोदपागाटमुद्रैर्यत्नेनशोकंठपासेननिबध्यमानः
उजोदमन्दनवर्जितचौजेगेविन्ददामोदरमाधवेति॥११॥
निजोगरोवकनकेलितोत्तंजेपीगृहीत्यानवनीतगोले॥

श्रीकृष्ण

मोदयमाधवेति॥४॥ काचित्कनामो जपुटे लिख्यं श्रीशुक्लं
किंशुकनक्तुं रां॥ अभ्यासपानाससो गृहान्नी गोविन्द
दामोदयमाधवेति॥५॥ गते गते गोपवधू स नूतः प्रति न
रां प्रजयमात्रिका नां॥ सकलांति न वाचयितुं प्रयत्नो गो
विन्ददामोदयमाधवेति॥६॥ पर्ये ककामा जललंकुना
जप्रख्यापयं प्रोखिल गोपकन्या॥ जगुः प्रबंधं स्वयं ता
बंधं गोविन्ददामोदयमाधवेति॥७॥ नामा लुजं बान्ध
रा कैलि लोवं गोपी जही बान्धव नीत चो जं॥ आबालकं
वा लकामा जुहाव गोविन्ददामोदयमाधवेति॥८॥

पुवतीप्रव्यष्टपुनपुवाहादधिनिर्ममया॥ उदायते गोपसती
 ससस्ता गोविन्ददा मोदय माधवेति॥ १८॥ क्वचित्प्रभाते दधिपू
 र्णापात्रे निविंध्य मंत्रं पुवती नु कु न्य॥ श्री लो क्य गारां विनि
 धं क जेति गोविन्ददा मोदय माधवेति॥ १९॥ श्री गायत्री भोजन
 मग्न जायं हि तै धि जि स्त्री तनु जं य सो दा॥ श्री गौतमि त्प्रे म परि ॥ ३॥
 पूते तां श्री गोविन्द॥ २०॥ स्वख्याप पा ले नित्ये त विस्मृदे न
 विं मा घं मु न यः प्र प न्नाः॥ तै ला च्यु तं त ल्म प न्नां वृ जं ति गो वि
 न्द॥ २१॥ विहाप निद्रा मउ सो द ये च विहाप कृ त्मा नि च विपू
 मुरव्याः॥ ये दा वं सा ने प्र प ठं ति नित्य गो वि न्द॥ २२॥ धन्या वं

समर्द्धः पत्न्या शीतलेन मन्दं गोविन्द दामोदरमाधवेति ॥ १३ ॥
गृहे गृहे गोपवधूकदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्ययेजे ॥ पुराणा
निनामानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदरमाधवेति ॥ १४ ॥ म
न्दोऽयमूखे वदन्ताभिः शान्तिं विन्वाधत्रे पूजितवेषु लादं ॥ गो गोप
गोपे जनमध्यसंस्थं गोविन्द दामोदरमाधवेति ॥ १५ ॥ उत्था
प्रगोष्ठापयन्नात्रिभागे स्मृत्वा पसोदा सुतया ॥ एकैस्त्रिंशं जा
यन्ति कारेदधिमंथयन्तो गोविन्द दामोदरमाधवेति ॥ १६ ॥ ज
ग्धोपदन्तो नवनीतपौं गे गृहे पसोदा विचिकित्सयन्ति ॥ १७ ॥ उवाच
सत्यं वदहं मुनात्रे गोविन्द दामोदरमाधवेति ॥ १८ ॥ श्रुत्वा चर्चयेत्

4

॥४॥

॥४॥

॥४॥

प्रन्वतं तं मं प्रो ज्ञदत्ता पता न्नां ॥ उवाच नो हाचि वु कं गृही त्या गो
 विन्द ॥ २८ ॥ प्रभात कावे वर व दूत्र नो भू गो व न्द रा धि ध त न
 त्रद गताः ॥ आ का व पा मा स व रां त मा घं गो विन्द ॥ २९ ॥ त्रयो श
 प्रे का वि प्र म द्वा प्र प दा क द म्बा द प त न्नु या निः ॥ गो पं ग रा
 शु कं सू त त दा निं गो वि न्द ॥ ३० ॥ स त्रै व रे का वि प्र ना ग व धं
 शि शं प सो दा न प्र नि श म्प ॥ त्रै शु लु ठं तं प धि गो प वा ला गो
 वि न्द ॥ ३१ ॥ अ क्रू र मा सा घ प दा मु कु र्द म्ब मु त्स बा र्ध म धु रा
 प्र वि ष्टः ॥ त दा स कौ पे रे र्ज प ती त्प मा वि तं गो वि न्द ॥ ३२ ॥ कं
 स स्य दू ते न प दै य नी तो य न्वा व न्ना नो व सु दे व सु नु ॥ त्रै गो

ने गोपगशाः सजोपी विलोक्य गोविन्द विमो गखिन्ना ॥ रा
 धापु फुह्री त्यत्र लोचनाभ्यां गोविन्द ॥ २३ ॥ प्रभात संचात्र ग
 लानु गावस्तद्वन्तरा र्धं तनयं पसेदा ॥ पुबोधं च त्पानित लेन
 मंदं गोविन्द ॥ २४ ॥ प्रभात लेशोभा इव दीर्घं केशावा नां गुपूष
 सा स न पूजते तोः ॥ नूलेत यूरां मुनयः पठन्ति गोविन्द ॥ २५ ॥
 एवं धुवारा विरहातु रा भ शं वृत्ता स्त्रियः कृष्ण विशक्त मा
 ने साः ॥ विसृज्य त्रैलोक्यं उदुःस्मयं ति गोविन्द ॥ २६ ॥ गोपी कदा
 विमनि निपंजय स्थं शकं वर्यो वाचयितुं पुत्र ता ॥ कंदर्पे ता पे
 पदा कमेति गोविन्द ॥ २७ ॥ गोवत्सवा लैः शिशुका कपन्त

5
५५॥

सा न जीवना श्रीमवलोक्य धानां नु मोदो विन्द विद्यो ग
रिव न्ता ॥ सखीपु फुल्लोत्पललोचनाभ्यां गोविन्द ॥ ३८ ॥
त्रिके वसने मधुन पिपात्यं सत्पंहितं पत्रमम्वदामि ॥ श्रव
सापे धामधुन त्रासि गोविन्द ॥ ४० ॥ आत्वं तिकं व्याधिहं जना
नां चिकित्सकं वेदविदो व दन्ति ॥ संसारतापत्रयनाशकी
जं गोविन्द ॥ ४१ ॥ जातो गद्या गद्यतिरामचन्द्रे सखन्मरो राप ॥ ५५ ॥
चेत्ते ससीते ॥ चक्रन्दनामस्य निजं जनां त्री गोविन्द ॥ ४२ ॥ एका
किं नीदराके कानां नाने दानां प्राना दया कन्धरे रा ॥ शीता तदा
चक्रदलनन्य नाथ गोविन्द ॥ ४३ ॥ यमात्रियुक्ता जनाका म
जासा विविन्य पातिह दिना प्रभो ॥ नु मोदसीत नवु नाथ पाहो गो ॥

पा १ पा ३ प ३ १५

४४

श्री भव नमः श्री गौ विन्द ॥ ३३ ॥ अत्र कुरु पुनः पदुवं सनाथं सग
 क्म नमः मयुगं निरीक्ष्य ॥ सचिं विष्टे गालि वगैपवा ला गौ वि
 न्द ॥ ३४ ॥ चक्रं देगौ पीन विनीय ना नै क्क शो न ही ना कुशु मे स
 यानी ॥ प्रफुल्लु नी लोत्पल लोचना चं गौ विन्द ॥ ३५ ॥ प्रा
 ता पित्त भ्यां प विचर्ज्य माना गृहा वक्तु र्म विनोप गौ पी ॥ अ
 गत्य मां पालय विश्वे नाथ गौ विन्द ॥ ३६ ॥ वन्द्या वन स्थित
 त्रिमश्रु बुद्धा गौ पी गता कापि व नं निशाया ॥ तत्राप्य हृद्य
 ति भयाद वोचदो विन्द ॥ ३७ ॥ सूर्या सपा ले नि ज्ञेय न गौ पी ना
 मानि विष्टोः पुनः दनि मर्त्या ॥ तेना श्वित त न्मप ता व्रज नि गो

६
६

त्वामेव ज्ञाचे मम देहि जि के सर्वा गमे दशध्वरे कृतान्ते ॥ वक्तव्य
मेवं मधु वं च मत्ता गो ॥ ५२ ॥ मज्जु मं चं मव वं धु मं ॥ मयि जि के
जस जे सूत्र मं म जो जे ॥ द्वि पाप ना धे मु नि मि ५ प्र त पं गो ॥ ५३ ॥ जि के
सदेव मज्जु सूत्र मं म जो जे ॥ त्रि पाप ना धे मु नि मि ५ प्र त पं गो ॥ ५४ ॥ जि के
पा (२) हरे म् म जो जे ॥ ५५ ॥ गो विन्द गो विन्द हरे म् म जो जे ॥ ५६ ॥ गो विन्द गो विन्द
विन्द मुकुन्द कृष्ण ॥ गो विन्द गो विन्द नमो भगवते ॥ ५७ ॥ त्वामे
व ज्ञाचे मम देहि जि के प्राप्ते यदा दशध्वरे कृतान्ते ॥ वक्तव्य मेवं
मधु वं च मत्ता गो ॥ ५८ ॥ सूत्र मं म जो जे ॥ इदमेव मत्ता गो ॥ ५९ ॥ त्वामे
ने इदमेव मत्ता गो ॥ देहावसा ने इदमेव मत्ता गो ॥ ६० ॥ कृष्ण केशव केशव
हरे वें कृष्ण वामन ॥ नाम नारायण नमो भगवते ॥ ६१ ॥ मधु वं च मत्ता गो ॥ ६२ ॥
॥ ॐ ॥ इति श्री विष्णु मधु वं च मत्ता गो विन्द दामोदर संहिता ॥ ६३ ॥

॥ ॐ ॥ इति श्री विष्णु मधु वं च मत्ता गो विन्द दामोदर संहिता ॥ ६३ ॥

प्रसीदविष्णोः ननु वंशनाथं सूत्रासूत्राणां दुरवसूत्रवहेतोः ननु सोऽस्य
 तीतुसमुद्रमव्ये गोविन्द ॥४५॥ अतर्जनेऽत्राह गृहीतपादेविसृज्य
 विलोकेन समस्तबंधः ॥ तदा गजेन्द्रो निरता जगाद गो ॥४६॥ हं स
 धजः संखपुतो ददर्श पुत्रं दुःखं प्रपते न मे नं ॥ पुन्यानि नामानि ह
 त्रेर्जयंतं गो ॥४७॥ दुर्धसं धाकं पवित्रं ह्यहं ह्यासाची कृताकानं
 नवास्मी सं ॥ अजः प्रविष्टः मनसा मुक्तताव गो ॥४८॥ ध्येयं
 सदा योऽजिभिः प्रप्रेयं चिन्ताहरेः चिन्तितपात्रिजातं ॥ कस्तुनि
 काकपितृतीत्येव रं गो ॥४९॥ गोविन्दमोदयदीनबंधुं संसार
 संतापत्रदेवदेव ॥ दुःखं कर्ता सूखं हेतुं हेतो गो ॥५०॥ संसारं कृपेप
 तितोप्यगाधं मोहांधपूर्य विषयाभितपे ॥ कजवलम्बं मनदेहि विष्णोः गो ॥५१॥